REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

गुजरात के प्राचीन-अर्वाचीन नाम

डा. शंकर वि. पटेल
आसि.प्रोफसर, श्री आदर्श आर्टस कोलेज, दियोदर (गुजरात)

❊ सारांश :

आरंभिग ऐतिहासिक काल में उत्तर गुजरात और सौराष्ट्र के प्रदेश को 'आनर्त' के नाम से पहचाना जाता था। क्षत्रियकाल में यह नाम का प्रयोग सिफ उत्तर गुजरात तक ही सीमित था। क्षत्रियो के समय में कच्छ, सुराष्ट्र और आनर्त एवम साबरकांठा के प्रदेश भी अलग गीनते। स्ट्रेजो, सौराष्ट्र को 'सेरोस्टस' कहते। टोलेमी और परिप्लस 'सुराष्ट्रीन' कहते। चीनी मुसाफर ह्यु-अन-शांग 'सुलका' अर्थात सोरठ का उल्लेख करते। टोलेमी के ग्रंथ में पहली बार 'लाटिका' यानी लाट का उल्लेख है। नवमी और दसमी सदी के समय दक्षिण गुजरात तथा मध्य गुजरात में से 'लाटी' शब्द का प्रयोजाता दसमी सदी में उत्तर गुजरात में उत्तर में सोलंकीओं की सत्ता स्थपाई तब पहले दक्षिण राजस्थान के भिन्नमाल प्रदेश में से प्रयोजायेल 'गुर्जर' नाम गुजरात के नव राज्य प्रदेश में लागु हुआ। आगे चलते लाट नाम दक्षिण गुजरात तक मर्यादित रहा। सोलंकी राज्य की सत्ता जैसे जैसे दक्षिण में प्रसरती गइ वैसे-वैसे 'गुर्जरा' नाम का प्रयोग बढता गया और आखिर वह नाम समस्त तल गुजरात के लिए प्रचलित हुआ। आगे चलकर 'गुर्जर' देश या गुर्जर भूमि के बदले गुजरात रुप प्रचलित हुआ। यह प्रदेश के लिए अभि का गुजरात नाम आखिर सातसो-साडे सातसो वर्ष से प्रचलित है। यह प्रदेश के लिए यह नाम का पहला ज्ञान उल्लेख आबुरास (ई.स.१२३३) में मिला है। मार्को पोलो, (ई.स.१२५४-१३२४) ने गुजरात नाम का उपयोग किया है। ई.स.१४५६ में रचा हुआ कानकदडे प्रबंध में गुजरात नाम का विश्वसनीय उल्लेख मिलता है।

मुस्लिम शासनकाल दौरान यह सभी प्रदेश के लिए गुजरात नाम प्रचलित रहा। उसमें सौराष्ट्र और कच्छ का भी समावेश था। यह नाम मोगल और मराठाकाल तक प्रचलित रहा। लेकिन ब्रिटीश सरकारने उसके कुछ भाग मिलाके और मुंबइ इलाका जिल्ला के रुप में मिलाने लगे और स्थानिक राज्यो में अलग-अलग जूथो के लिए एजन्सीओ की रचना पर से गुजरात राजकीय दृष्टि से छिन्न-भिन्न हो गया। फिर भी भाषांकित तथा सांस्कृतिक दृष्टि से गुजरात का अस्तित्व चालु रहा और दिन-ब-दिन दृढ होता गया। आझादी मिलने के बाद मुंबई इलाका के बदले मुंबई राज्य हुआ। आज के गुजरात के लिए गुजरात नाम का प्रयोग दसमी सदी में सोलंकी काल में शुरु हुआ। गुजरात दसमी सदी से २१मी सदी तक में अनेक राजकीय और सांस्कृतिक परिवर्तन का अनुभव किया है।

यह प्रदेश के लिए आज का गुजरात नाम आखरी सातसो-साडे सातसो बरस से प्रचलित है। यह प्रदेश के लिए उसके नाम का पहल-वहला 'ज्ञात' उल्लेख आबुरास (ई.स.१२३३) में मिलता है। यह प्रदेश सोलंकी (चौलुक्य) काल में 'गुर्जरदेश' के नामे पहचानने लगे है। यह नाम का पहला 'ज्ञान' प्रयोग क्षेमेन्द्र की 'औचित्य विचार चर्चा' (ई.स.९९७) में आया है। गुजरात मूल में 'गुर्जर' या 'गुज' शब्द रहा है। यह नाम यह प्रदेश के सोलंकीकाल पहले लागु हुआ हो ऐसा कुछ मिला नहीं।

कच्छ और सौराष्ट्र प्राकृतिक एकम होने से उसका नाम की बहोत सी प्राचीनता मिली है। कच्छ नाम पाणिनि के समय (ई.स.५मी सदी) में प्रचलित होने का मालूम हुआ है। सौराष्ट्र के लिए पहले संस्कृत म सुराष्ट और प्राकृत में 'सुरट्ठ' रुप प्रयोजाता आगे चल के उसमें से सौराष्ट्र और सोरठरुप प्रचलित हुआ। मराठा काल में उसके बदले काठियावाड नाम प्रचलित हुआ और ब्रिटीश काल में वह चालु रहा। आझादी के बाद फिर से सौराष्ट्र नाम फिर से प्रचलित हुआ।

लेकिन यह दो द्विपकल्पो के प्राकृतिक विभागो के अलावा मुख्य भुमि के समग्र प्रदेश के लिए प्राग-सोलंकी काल में ऐसा कोइ नाम रुढ हुआ है या नहिं तथा वह दो विभाग सहित के यह समस्त प्रदेश के लिए कोई सर्वसामान्य नाम प्रयोजाता के नहिं यह समझना मुश्किल है।

पुराणो में दिया हुआ वृत्तांत के हिसाब से आद्य ऐतिहासिक काल में आनुसूतिक वृत्तांत के हिसाब से सार्पातो का राज्य प्रदेश आनर्त के नामे से पहचाना जाता और उसकी राजधानी कुशस्थली थी। जो यादवो के समय में 'द्वारवर्ती' के नाम से संस्करण हुई यह उल्लेख अनुसार आनर्त में सौराष्ट्र का (के कम से कम उसके द्वारावती प्रदेश का) समावेश होता आरंभिग ऐतिहासिक काल में यह नाम तल गुजरात का प्रयोग एक समय लागु हुआ तो कभी कभार सौराष्ट्र और उत्तर गुजरात सहित समस्त प्रदेश आनर्त के नाम से पहचाना जाना चाहिए। क्षत्रीय काल में तो वह नाम का प्रयोग उत्तर गुजरात तक सीमित दिखता है। आनंदपुर (वडनगर) 'आनर्तपुर' के नाम से भी पहचाना लेकिन तब वह 'आनर्त देश' के पाटनगर होने का सूचित है। क्षत्रयो के समय में 'मोहप' (महिकोठो) 'सारस्वत' (सरस्वती) कांठा उपरांत श्वंभ्र (सांबरकांठा) का प्रदेश भी अलग था। पुराणो में आंतरनर्मद, भृगुकच्छ, कच्छ, सौराष्ट्र और आनर्त तथा (पश्चिम

सीमा) के प्रदेश जाना जाता। इस पर से तल गुजरात में आनर्त उपरांत दूसरे अनेक अलग प्रदेश होने का मालूम होता है। तल-गुजरात के लिए या समस्त गुजरात के लिए आरंभिक ऐतिहासिक काल में कोई एक नाम प्रयोजाता हो ऐसा जानने का मिला नहीं।

मैत्रक काल दरमियान कच्छ, सौराष्ट्र, आनंदपुर, वडाली (इडर ग्यासे), खेटक (खेडा), सुर्यापुर (गोधरा के पास), शिवभागपुर (शिवराज पुर), सुंगम खेदक (संखेडा), भृगुकच्छ (भरुच), नांदीपुर (नांदोद) अनुरेश्वर (अंकलेश्वर) कतारग्राम (कंतार गाम सुरत के पास) नवसारिका (नवसारी) आदि प्रदेश के वहिवटी विभाग प्रचलित थे। पश्चिम मालवा के लिए 'मालवक' नाम प्रयोजाता उस समय के पहले का 'आनर्त' नाम प्रचलित हुआ लगता नहीं। उस समय के अभिलेखो में समस्त प्रदेश के लिए कोई नाम प्रयोजाया नहीं। लेकिन यु-अेन-त्सांग मालवक को 'दक्षिण लाट' के नाम से पहचानते है और 'आर्यमंजुश्रीमुलकल्य' (साठमी सदी) में भी यह समग्र प्रदेश के लिए 'लाट-जनपद' नाम प्रयोजाया लगता है। उस पर से उस समय यह समस्त प्रदेश 'लाट' नाम से पहचाना जाता हो ऐसा संभव है।

उस के बाद कुछ सालो में दक्षिण के चालुक्यो से एक शाखा नवसारी प्रदेश में स्थपाई तब उस शाखा की सत्ता तल के प्रदेश के लिये क्या प्रयोजाता वह जानने को नहीं मिला। लेकिन उसे के बाद वहाँ दक्षिण के राष्ट्रकूटो की सत्ताप्रवर्ती ने वह सत्ता दक्षिण गुजरात तथा मध्य गुजरात पर प्रसरी तब वह प्रदेश 'लाट मंडल' के नाम से जाना जाता एसा स्पष्ट है।

दसमी सदी में उत्तर गुजरात में उत्तर के सोलंकी (चौलुक्यो) की सत्ता स्थपाई तब पहले दक्षिण राजस्थान के भिन्नमाल प्रदेश के लिए प्रयोजाया हुआ 'गुर्जर' नाम गुजरात के नये राज्यप्रदेश को लागु हुआ और 'लाट' नाम दक्षिण तथा (मध्य) गुजरात के लिए प्रचलित रहा। आगे चलकर 'लाट' नाम का प्रयोग दक्षिण गुजरात तक सीमित रहा। सोलंकी राज्य की सत्ता जैसे जैसे दक्षिण में प्रसरती गई वैसे वैसे 'गुर्जर' नाम का प्रयोग विस्तरता गया आर आखिर यह नाम समस्त तण-गुजरात के लिए प्रचलित हुआ। आगे चलकर 'गुर्जर देश' या 'गुर्जरभूमि' के बदले 'गुजरात' रुप से प्रचलित हुआ। जिसका पहला ज्ञात प्रयोग वाघेलाकाल दरमियान तेरमी सदी का मिला यह पहले सूचवाया है।

मुस्लिम शासनकाल दरमियान यह सभी प्रदेश के लिए गुजरात नाम प्रचलित रहा। उसमें सौराष्ट्र और कच्छ का भी समावेश था। यह नाम मोगल और मराठाकाल तक प्रचलित रहा। लेकिन ब्रिटीश सरकारने उसके अमुक नाम भाग मिलाके और मुंबइ इलाका जिल्ला के रुप में मिलाने लगे और स्थानिक राज्यो में अलग-अलग जूथो के लिए एजन्सीओ की रचना पर से गुजरात राजकीय दृष्टि से छिन्न-भिन्न हो गया। फिर भी भाषांकित तथा सांस्कृतिक दृष्टि से गुजरात का अस्तित्व चालु रहा और आझादी मिलने के बाद मुंबई इलाका के बदले मुंबई राज्य हुआ। ई.स.१९६० में मुंबई राज्य के भाषाकीय धोरणो का द्विभाषीकरण हुआ। तब एक वहीवटी प्रदेश तरीके 'गुजरात राज्य' अस्तित्व में आया। हाल यह नाम सौराष्ट्र तथा कच्छ सहित समस्त गुजराती प्रदेश के लिए प्रयोजाता है।

❊ संदर्भसूचि :

१. दवे मंजुलाबहेन बी., ''गुजरात की आर्थिक और प्रादेशिक भूगोल'', तीसरी आवृत्ति, युनिवर्सिटी ग्रंथनिर्माण बोर्ड, गुजरात राज्य, अहमदाबाद-६, २००२

२. परीख रसीकलाल छोटालाल, ''गुजरात का राजकीय और सांस्कृतिक इतिहास'', ग्रंथ-१, दूसरी आवृत्ति, पुरातत्व खाता, गुजरात राज्य, गांधीनगर, २००४

३. श्री कस्तुरभाइ लालभाइ विद्याविस्तर ग्रंथश्रेणी-३, गुजरात विश्वकोश ट्रस्ट, २०००

४. ब्रह्मकुमार भट्ट-लेके रहेंगे महा गुजरात, महागुजरात, अहमदाबाद, १९८७

५. डॉ.माणेकभाई पटेल, 'सेतु', ''अहमदाबाद कथा'', पहली आवृत्ति, गुर्जर ग्रंथरत्न कार्यालय, अहमदाबाद, १९९६

६. कुन्दनलाल ज. धोलकीया, ''समय के सथवारे गुजरात'', प्रकाशन : के.वी.ठक्कर, मुंबइ, पहली आवृत्ति, इ.स.१९९१

७. भरत चौधरी, ''भारत का समकालीन इतिहास (१९४७ से १९७७) प्रकाशक : भारत इन्स्टीटयुट, अहमदाबाद, इ.स.१९९६

डॉ. शंकर वि. पटेल

आसि.प्रोफसर, श्री आदर्श आर्टस कोलेज, दियोदर (गुजरात)